SBI Life INSURANCE | Celebrate life
With Us, You're Sure

STUDY MATERIAL

Amrita Kumari
AMRITA KUMARI, Asst. Prof.
Deptt. of ECONOMICS, M.V. College, Buxar

SATURDAY 2 MARCH

B.A. (Hons.) Part - I,
Paper — I (Micro Economics)

TOPIC

मजदूरी निर्धारण का आधुनिक सिद्धान्त
(Modern Theory of Wage Determination)

मजदूरी का आधुनिक सिद्धान्त माँग और पूर्ति का सिद्धान्त है जिसके अनुसार मजदूरी श्रम की सेवाओं का मूल्य है, श्रम की माँग और पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है

श्रम की मांग :-

श्रम की माँग उत्पादक द्वारा की जाती है। उत्पादक द्वारा कम मजदूरी पर अधिक तथा अधिक मजदूरी पर कम श्रम की माँग की जाती है एक उत्पादक उतने ही श्रमिकों को काम पर लगायेगा जिनके लगाने से श्रम की सीमान्त आगम उत्पादकता (MRP) श्रमिकों पर किये गए सीमान्त व्यय के बराबर हो। श्रम की माँग की लोच मुख्य रूप से तीन बातों पर निर्भर करती है —

SUNDAY 3 MARCH

① उत्पादित वस्तु की माँग की लोच,

SBI Life INSURANCE | Celebrate life
With Us, You're Sure

TUESDAY 5 MARCH

(2) श्रम के प्रतिस्थापक साधनों की कीमत, तथा
(3) तकनीकी ज्ञान का स्तर।

श्रम की पूर्ति :—

श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है। श्रमिक के जीवन-स्तर को बनाये रखने के लिए जितने धन की आवश्यकता होती है वह श्रमिक की ओर से मजदूरी की न्यूनतम सीमा निर्धारित करती है। कोई भी श्रमिक इससे कम मजदूरी लेकर स्थायी रूपसे काम करना पसन्द नहीं करेगा।

~~श्रम की पूर्ति~~ श्रम की पूर्ति पर श्रमिकों की संख्या तथा श्रम की कार्यकुशलता का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा एक श्रमिक की किसी काम के लिए रुचि, आराम की इच्छा, विभिन्न प्रकार के कार्यों और स्थानों की तुलना आदि महत्वपूर्ण कारण है और एक निश्चित मजदूरी दर पहुँचने के विशेष के लिए श्रमिकों की पूर्ति निर्धारित करते हैं। श्रम की पूर्ति तथा मजदूरी का ~~[illegible]~~ आरंभ में धनात्मक संबंध होता है अर्थात् कम मजदूरी पर कम श्रम की पूर्ति की जाती है तथा अधिक मजदूरी दर पर अधिक। लेकिन एक सीमा के पश्चात् श्रमिक आराम अथवा अवकाश को अधिक प्राथमिकता देने लगते हैं जिससे श्रम की पूर्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और श्रम की पूर्ति वक्र पीछे की ओर मुड़ जाता है।

SBI Life INSURANCE
With Us, You're Sure
Celebrate life

THURSDAY 7 MARCH

मजदूरी का निर्धारण :-

मजदूरी का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है जहाँ श्रम की माँग एवं पूर्ति एक-दूसरे को काटते हैं।

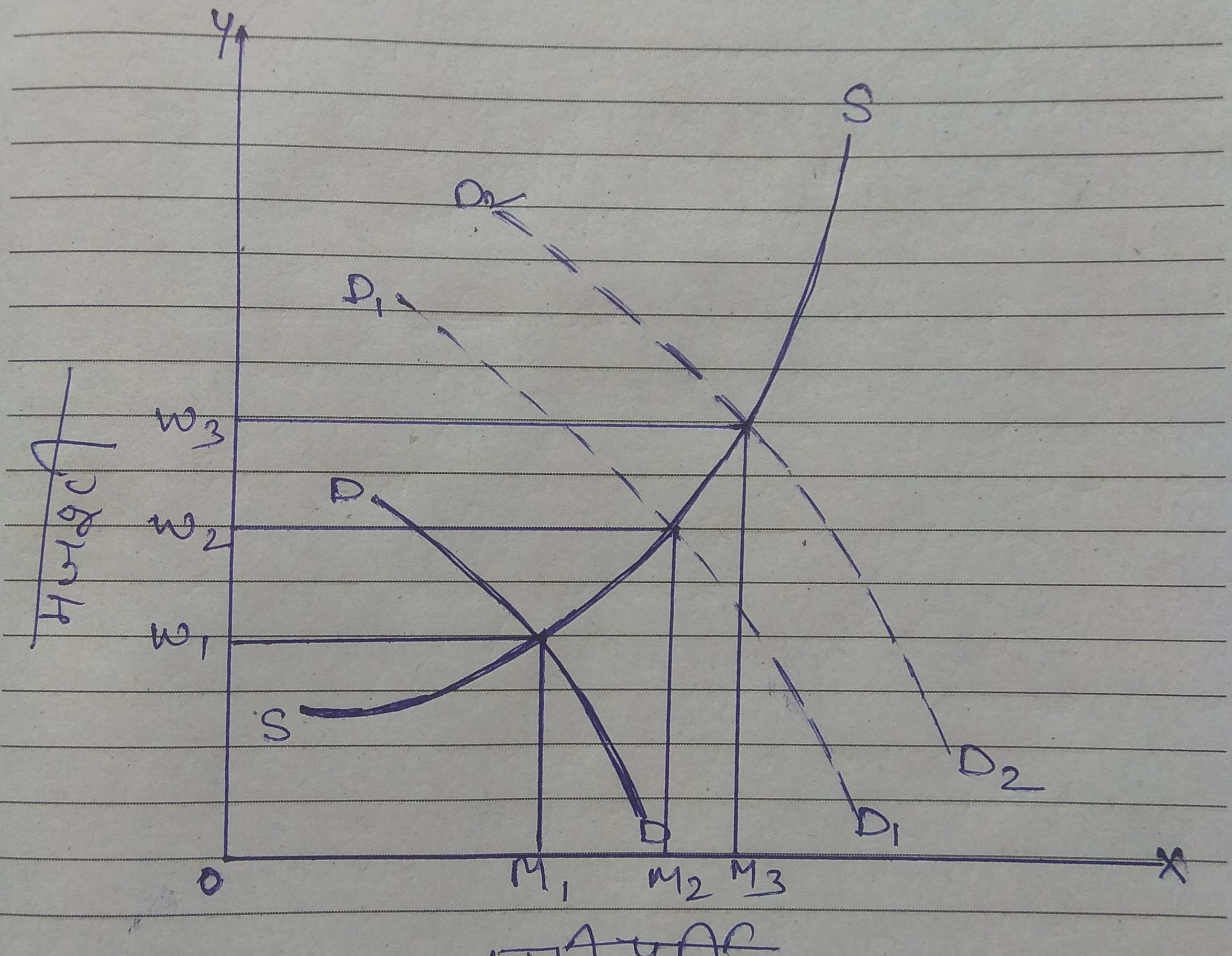

श्रम की पूर्ति

Book ← आर्थिक विश्लेषण के सिद्धान्त - टी० टी० सेवी

Amrit Kumar